'लोरिक विजय' उपन्यासमे लोक संग्राम

– डॉ. जीवछ राम
अध्यक्ष
मैथिली विभाग,
बी. एन. कॉलेज,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

'लोरिक विजय' उपन्यास लोकगाथाक आधार पर लिखल लोकगाथा मर्मज्ञ ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक उपन्यास अछि। एहि उपन्यासक नायक लोरिक यादव कुल मे जन्म लेनिहार सामान्य लोक छलाह, अवतार पुरुष नहि। ई शूर, वीर आ पराक्रमी पुरुष छलाह। तत्कालीन समाज मे व्याप्त शोषण, उत्पीड़न आ दमनक जे स्थिति छल, तकर विरुद्ध आवाज उठौलनि। तैं हिनका लोक अन्यायी, अत्याचारीक दमनकर्ताक युग–पुरुषक रूपमे देखैत छल।

अगौरा गामक लोकप्रिय राजा छलाह सहदेव। हिनकर हरबाहक नाम छलनि कुब्बे आ पत्नी छलथिन खुलैन। ई दम्पत्ति बड़ निर्धन छल। हरबाही आ चरवाही हिनक जीविकाक मुख्य साधन छलनि। ई दम्पति माँ दुर्गाक पैघ उपासक छल। एक दिन माँ दुर्गा प्रसन्न भए स्वप्न मे कहलीह जे अहाँ हमर पैघ उपासक छी। तैं अहाँ कैं शूर, वीर आ शौर्य, पराक्रमी पुत्रक प्राप्ति होएत। सैह भेलनि। माँ दुर्गाक आशीर्वाद सँ दू टा पुत्र रत्नक प्राप्ति भेलनि। एक टाक नाम रखलनि लोरिक आ दोसराक नाम रखलनि सावर। ई दुनू भाइ देखय मे सुन्दर छलाह। तेहने शक्तिशालियो लगैत छलाह। "ओ नीलगिरिक चलयमान शृंग जकाँ लगथि। ताल ठोकथि तऽ गाछ–बिरिछ टुटि–टुटि कऽ खसऽ लगए। दमसि कऽ चलथि तऽ धरती काँपय लगए। हँसथि तऽ लोक कैं मेघ गर्जनक अनुमान होइक। ओ अपना हाथक खण्डा घुमबथि तऽ अनवरत सौदामिनीक छटाक भान होइक। छोट सन 'सावर' लड़ैत मस्त साढ़ सभ कैं तरहत्थी सँ ठेलि कऽ फराक कऽ देथि। भीषण सँ भीषण बाधक रान पकड़ि कए चीरि देथि आ बड़का सँ बड़का तरुवरक जड़ि मे धक्का दए कए ओकरा डोला देथि जाहि सँ ओकर फल भड़भड़ा कए धरती पर पथारि लागि जाइक।"[1] अगौरा गाम मे एक टा सिलहट नामक अखाड़ा छल जकर ख्याति दूर–दूर धरि पसरल छल। ओहि अखाड़ा पर मल्ल सभक दाँव–पेंचक अभ्यास निरंतर होइते रहैत छल। लोरिक ओहि अखाड़ाक पराक्रमी आ ख्याति मल्ल छलाह। ओ भगवती प्रदत्त विशाल खण्डा कैं अनवरत संचालन करैत रहैत छलाह। तैं लोरिकक पराक्रमक ख्याति दूर–दूर धरि पसरि गेल छल। लोरिक आ सावर जिनगी भरि

जन–सामान्यक रक्षाक लेल भगवतीक समक्ष प्रतिज्ञा लेने छलाह। तँ ई दुनू भाइ जन–कल्याणक रक्षाक लेल सदैव ठाढ़ रहलथि।

गौरा गामक राजा छल उघरा पँवार। ओ अन्यायी एवं अत्याचारी राजा छल। ओकर आतंक एवं दहशत सँ ओहि राज्यक प्रजा सभ थर–थर काँपैत छलाह। ओ एहन अन्यायी, अत्याचारी राजा छल जे दोसराक बहु–बेटीक इज्जत लुटब, ओ अपन अधिकार बुझैत छल। एकर विरोध करबाक साहस किनको मे नहि छलनि। "उधरा पँवारक अत्याचारेँ जनसाधारण त्राहि–त्राहि कऽ रहल छल। हत्या, नारी अपहरण, मद्यपान, लुटि आ षड्यन्त्र कार्य मे ओ निष्णात छल।"[2] उघरा पँवारक आतंक सँ राज्यक सम्पन्न सँ सम्पन्न एवं प्रभावशाली सँ प्रभावशाली लोक ओकरा समक्ष नतमस्तक रहैत छलाह। ओहि गामक रहनिहारि छलीह माँजरि। ई रूप–सौन्दर्यक प्रतिमूर्ति छलीह। तें उघराक नजरि माँजरिक रूप–सौन्दर्य पर रहैत छल कियाक तऽ उघरा पँवार नवविवाहिता कन्याक अपहरण करबाक प्रतिज्ञा लेने रहय। तँ ओ माँजरिक बियाहक इन्तजार कए रहल छल।

माँजरि दुष्ट, पापी, अत्याचारी, आतंकी उघरा पँवार से अपन सतीत्वक रक्षाक लेल माँ भगवतीक अखण्ड उपासना करैत छलीह। "हिनक शील, करुणा आ प्रभा सँ लोक एतेक प्रभावित छल जे हिनको भगवतिये बुझन्हि।"[3] उघरा पँवार कँ पराजित करयबाला वर तकबाक भाड़ माँजरिक मामा सेवाचन पर छलनि। "तें माँजरि लेल एहन वर ताकल जाइत छल जे उघरा राजा के हरा सकय।"[4] एक दिन ओ सिलहट अखाड़ा पर पहुँचलाह। ओहि ठाम एक सँ एक मल्ल दाँव–पेंचक अभ्यास कए रहल छलाह। ओहि मल्ल सभमे सबसँ बलशाली मल्ल छलाह वीर लोरिक जिनकर विशालकाय शरीर "सखुआक सोहल–सारिल आ सलाल खम्भा सन–सन जाँघ आ धस्सल आ रस्सल (तेलाह) पाथरक धोबिया पाट सन छाती। सिंह सनक डाँर, वृषभ सनक कान्ह आ दन्तार हाथी सन उन्नत मस्तक छलनि। ओ जखन चलथि तऽ लागय जेना शैलाचल पर्वत शृंग रमकल जा रहल हो।"[5] महाबलशाली लोरिकक शौर्य, पराक्रम एवं सौन्दर्य छवि देखतहि सेवाचन कँ पूर्ण विश्वास भए गेलनि जे इएह महाबलशाली लोरिक उघरा पँवार कँ परास्त कए सौन्दर्यक प्रतिमूर्ति माँजरिक सतीत्वक रक्षा कए सकैत छथि। तँ माँजरिक बियाह महाबलशाली लोरिक सँ तय भेलनि।

बरियातिक हेतु लोक तैयार भेलाह। किछु लोक उघरा पँवारक अत्याचार, दुराचार, अन्याय एवं दहशतक भय सँ भागि पड़ेलाह आ किछु लोक लोरिकक शौर्य, पराक्रम आ साहस पर विश्वास रखनिहार बरियाति सभ माँजरिक घर पहुँचलाह। गौरा गामक स्त्री लोकनि लोरिक सन सुन्दर वर आ ओकर विशालकाय शरीर देखतहि प्रसन्न एवं मुग्ध भए गेलीह। गौरा गामक समस्त स्त्री लोकनि

कैं पूर्ण विश्वास भए गेलनि जे एहि महायोद्धा वीर द्वारा उघरा पँवार अवश्य मारल जायत। एकर प्रमाणार्थ निम्न पद द्रष्टव्य अछि–

"सुप सन–सन कान छलइ, छिट्टा सनक कपाड़।

डोका सन–सन आँखि छलइ, दाँत जेना फार।।

लट भरि टिक्की फहरायल छल, दू गज सोना लाग।

मुट्ठी भरि जे डाँड़ि छलइ, धोती पेंचदार।।"[6]

माँजरिक लोरिक संग सिन्दूरदान भेलनि। महासुन्दरी माँजरिक बियाह अनगिनित विघ्न–बाधाक बीच महाबलशाली लोरिक संग सम्पन्न भेल मुदा माँजरिकैं क्षण–क्षण आशंका होइत छलनि जे उघरा पँवार कोनो षड्यंत्र नहि कए दिअ? सैह भेल। उघरा पँवार सोनिका आ मोनिका सन मल्ल कैं माँजरिक अपहरण करबाक उद्देश्य सँ पठौलक। सोनिका आ मोनिका कैं तरुआरि लेने महिसासुर जकाँ भेष मे आबैत देखतहि माँजरि मने मन सोचलीह जे "अतेक श्रम ओ साधना सँ प्राप्त दिव्य वर छिना न जाय।"[7] लोरिक पर सोनिका आ मोनिका वार करैत अछि। तखने लोरिक खण्डा उठा कय सोनिका आ मोनिका सन विशाल मल्लक मुड़ी छोपि लैत छथि।

बियाहक उपरान्त लोरिक नवविवाहिता पत्नी माँजरिक संग अपन गाम अगौराक हेतु विदा होइत छथि। एम्हर उघरा पँवार माँजरिक अपहरण करबाक हेतु लोरिक कैं बाटहिमे छेक लैत छनि। एहि कारण लोरिक आ उघरा पँवारक बीच मल्लयुद्ध बाझि जाइत अछि। अन्तमे महाबली, महायोद्धा माँ भगवतीक उपासक लोरिकक विशाल खण्डा सँ उघरा पँवार मारल जाइत छैक। उघरा पँवारक मरलाक उपरान्त सम्पूर्ण गौरा गामक जन–जन मे प्रसन्नताक लहरि पसरि जाइत अछि। लोक कैं उघरा पँवारक अत्याचार, दुराचार, हत्या, लूट, अपहरण एवं दहशत सँ मुक्ति भेटलनि। समाज मे अमन–चौन एवं शान्तिक वातावरण बनल। महायोद्धा लोरिकक जय–जयकार सम्पूर्ण गौरा गाम मे होमय लागल। लोरिक माँजरिक संग सिंह जकाँ झुमैत अपन गाम अगौरा पहुँचलाह।

एक दिन अगौरा गामक रुपसी चनैन कैं बण्ठा चमार अपहरण करबाक प्रयास कयने छल मुदा ओ सफल नहि भेल। ताहि कारणें लोरिक बण्ठा चमार कैं चेतौलनि। तैयो ओ बात नहि मानलकनि। इएह कारणें एक दिन बण्ठा चमार आ वीर लोरिक संग मल्ल युद्ध बाझि गेल। दुनू मल्ल एके सिलहट अखाड़ाक खेलल मित्रो छलाह। एक दोसराक दाँव–पेंच सँ परिचितो छलाह।

तें तीन दिन तीन राति दुनू मे मल्ल युद्ध होइते रहल। अन्त मे लोरिक अपन खण्डा सँ बण्ठा चमारक मूड़ी छोपि लेलनि। चारु कात हर्षक लहरि पसरि गेलैक। स्त्री लोकनि सभ महायोद्धा लोरिकक जय–जयकार कयलीह। कहबाक अभिप्राय ई जे बण्ठा चमार लोरिकक मित्र छल। दुनू विख्यात मल्लो छलाह मुदा लोरिक हिनको नहि छोड़लनि। किएक तऽ ओ रुपवती चनैनक शीलहरण करबाक प्रयास कएने छल। तें बण्ठा चमार सन मित्रो कँ मारि खसौलनि किएक तऽ लोरिक प्रतिज्ञावादी वीर पुरुष छलाह। तँ समाज मे आतंक, अपहरण, अत्याचार, दुराचार, शोषण, उत्पीड़न करनिहारक विरुद्ध आवाज उठबैत छलाह।

एक दिन चनैन आ लोरिकक मिलन भेलनि। अपूर्व सुन्दरी चनैन पर लोरिक आकृष्ट भेलाह। तँ दुनू अगौरा गाम सँ हरदीथानक लेल विदा भेलाह। ओहि ठामक राजा मोचनि अपूर्व सुन्दरी चनैनक रूप–सौन्दर्य पर मोहित भए जाइत छथि। तँ लोरिकक हत्या करबाक लेल गेरूआ अखाड़ाक प्रधान सेनापति गजभीमल सँ मिलि कए षड्यंत्र करैत अछि। एक दिन गजभीमल आ लोरिक बीच मल्ल युद्ध बाझि जाइत छैक। लड़ैत–लड़ैत गजभीमल लोरिकक विशाल खण्डा सँ मारल जाइत अछि। राजा मोचनि एकर प्रतिशोध लेबाक लेल अपन प्रिय मित्र न्यूरिंगढ़क महाप्रचण्ड राजा हरबाक नाम सँ लोरिक द्वारा पत्र भेजैत अछि। पत्र मे लिखने अछि जे पत्र वाहक लोरिक कँ देखतहि ओकर मूड़ी छोपि लेब। लोरिक कटरा नामक घोड़ा पर सवार भए न्यूरीगढ़क राजा हरबाक ओतय प्रस्थान करैत छथि। रास्ता मे एक विशाल दूर–दूर घरि पसरल नरसरि खरहोरिक बहेरक गाछक छाया मे प्रचण्ड धूपक कारणँ आराम करैत छलाह। तखने हरबाक नौकर घुघरा पँवार वीर लोरिक पर आक्रमण करैत अछि। तें दुनू मे मल्ल युद्ध बाझि जाइत अछि। अन्त मे लोरिक अपन विशाल खण्डा सँ ओकर मूड़ी छोपि लैत छथि।

न्युरीगढ़क हरबा महाप्रचण्ड आ सामन्ति राजा छल। ओकर बाबन कोसक राज मे जनताक दमन, उत्पीड़न होइत छल। ओकर छोट भाइ बरबा रणक्षेत्र मे तलवारक संचालन मे निपुण छल। राजा हरबा एहन अत्याचारी राजा छल जे ओ हथौरी नामक स्थान पर एक टा भयंकर बनिसार बनबौने छल। "ओहि मे ओकरा से बिजित व्यक्ति बेड़ी–हथकरी पहिरने असाध्य यन्त्रणा भोगथि वा ओकरा मोन होइ तऽ अपना विरोधी कँ ओ खौलैत कड़ाह मे रखबा दैक, नहि तऽ शिकारी कुकुर सँ नोचबा दैक अथवा जीविते माटि मे गरबा दैक।"[8]

"हरबा लोकपीड़क राजा छल प्रबल प्रतापी आ अत्याचारी। लोक (जनता)क मोल ओकरा सोझा मे हिरण आ सुग्गर सँ बढ़ि कऽ नहि छलैक जकरा ओ भोज्य (शोषणक जोकर) बुझैत छल आ जकर शिकार (दमन, हत्या) ओ सुगमता सँ कए सकैत छल।"[9]

राजा हरबा एहन अय्यासी आ अनाचारी छल जे दुबही–सुबही नामक कुमारि ब्राह्मणी केँ अपहरण कए अपन विलास भवन मे रखने छलैक। ओकर अइय्यासक कोनो ओर–छोड़ नहि छलैक। "ओकर केली कक्षक चारू भर, कतहु नृत्य–गीत चलैत छल तऽ कतहुँ आसव–पान। ओहि पान भूमि मे कुमारि सुन्दरी सभ कियो आसव घट, कियो पान पात्र, कियो पुष्पमाला, कियो गुआ पान तऽ कियो चौर लेने अर्धनग्न ठाढ़ि रहैत छलीह।"[10]

एक राति राजा हरबा दुःस्वप्न देखैत अछि। तँ ओ भय सँ अपन सम्पूर्ण सेना एवं भाइ बरबाक संग नरसरि खरहोरि दिस जाइत काल देखैत अछि जे घुघरा पँवारक मस्तक मुँह बौने ओंघराएल अछि। ताहि कारणेँ नरसरि खरहोरि मे लोरिकक संग बरबाक युद्ध बाझि जाइत अछि। लड़ैत–लड़ैत बरबा लोरिकक विशाल खण्डा सँ मारल जाइत अछि। लोरिक सन शौर्य पराक्रम एवं रण अश्व कटरा घोड़ा केँ देखतहि हरबा अपन सैनिक संग भागि जाइत अछि आ ओ कुँअर अंगार सँ सहायता लैत अछि। कुँअर अंगार आ लोरिकक संग तलवार युद्ध होइत अछि। अन्त मे लोरिक कुँअर अंगार केँ अपन विशाल खण्डा सँ मारि खसबैत छथि।

नरसरि खरहोरिक विजयक बाद महायोद्धा लोरिक राजा हरबाक हथौरी बनिसार पर आक्रमण करैत छथि। राजा हरबा लोरिकक विशाल खण्डा सँ मारल जाइत अछि। महाप्रचण्ड राजा हरबाक मरलाक उपरान्त कारागृह मे वर्षो सँ आजीवन कारावास भोगैत कतेको राजा, महाराजा, धनिक, गरीब, वीर, महापुरुष सभ केँ महायोद्धा लोरिक मुक्त करैत छथि। तैं बाबन कोसक राज मे लोरिक जय–जयकार होइत छनि सम्पूर्ण न्युरिंगढ़क लोक मे अमन–चौन एवं शान्तिक वातावरण स्थापित होइत छनि। बाबन कोसक राज मे रहनिहार लोक निर्भयपूर्वक अपन जीवन–यापन शुरू कए दैत छथि।

लोरिकक अंतिम युद्ध होइत छनि, लाख–लाख गायक अपहरणकर्त्ता गायक खाल खिचबा–खिचबा कए व्यापार कयनिहार, धोखा सँ वीर भाइ सावरक हत्या कएनिहार अत्याचारी राजा कौल्हमकाड़ाक संग युद्ध मे लोरिक विजय होइत छथि। लोरिक अपन भाइ सावरक प्रति"ोधक बदला लैत छथि। लोरिक के विजयक उपरान्त चारू दिस जय–जयकारक स्वर गूँजि उठैत छैक।

निष्कर्ष मे हम कहि सकैत छी जे 'लोरिक विजय' उपन्यास मे सामाजिक अत्याचार, अनाचार, दमन, शोषण, उत्पीड़नक बड़ सजीव चित्रण कयल गेल अछि। एहि उपन्यासक नायक लोरिक समाज–कल्याणक भावना सँ ओत–प्रोत छलाह। समाज मे दुखित, पीड़ित, असहाय लोकक लेल सदिखन तत्पर रहैत छलाह। तत्कालीन मिथिलाक छोट–छोट सामन्ती राजाक अत्याचार, अनाचार, दुराचार, अन्याय, गौ अपहरण, स्त्री अपहरणक खौफ, दहशत आ आतंक सँ जन–सामान्यक जीवन अस्त–व्यस्त एवं त्रस्त छल। एहने परिस्थिति मे लोरिक, हुनक बियहुता पत्नी मौजरि, प्रेयसी चनैन, भाइ सावर, मित्र राजल ओहि जन–सामान्यक जीवन मे उत्पीड़न जन आक्रोश कँ सहन नहि कए सकलाह। तँ जन सामान्य कँ संगठित कए ओहि अत्याचारी, व्यभिचारी आ अइय्यासी राजा सभक विरुद्ध ई लोकनि अपन आवाज बुलंद कएलनि। तँ समाज मे सुख, शांति एवं अमन–चौन कायम भेल। जन–सामान्यक जन–जीवन मे शांति, उन्नति एवं प्रगतिक मार्ग प्रशस्त भेलनि। तँ 'लोरिक विजय' उपन्यास लोक संग्रामक सप्रमाण दस्तावेज जकाँ बुझि पड़ैत अछि।

संदर्भ सूची

1. लोरिक विजय – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाता; 1970, पृ. 5
2. मैथिली लोक गाथाक इतिहास – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', कर्णगोष्ठी, कोलकाता; 2006, पृ. 31
3. लोरिक विजय – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाता; 1970, पृ. 6
4. मैथिली दलित लोकगाथा ओ संस्कृति – सम्पा. शिव प्रसाद यादव, साहित्य अकादेमी, 2015, पृ. 102
5. मैथिली लोक गाथाक इतिहास – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', कर्णगोष्ठी, कोलकाता; 2006, पृ. 30
6. उपरोक्त, पृ. 1, 2
7. लोरिक विजय – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाता; 1970, पृ. 19
8. उपरोक्त, पृ. 48

9. मैथिली लोक गाथाक इतिहास – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', कर्णगोष्ठी, कोलकाता; 2006, पृ. 77
10. लोरिक विजय – ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाता; 1970, पृ. 48